शिक्षा में आदर्शवाद

<u>आदर्शवाद का अर्थ एवं परिभाषा</u>-

आदर्शवाद शब्द की उत्पत्ति Idealism शब्द की उत्पत्ति प्लेटो आध्यात्मिक सिद्धांत से हुई है-अंतिम वास्तविकता, विचारों या विचारवाद में है।आदर्शवाद वह दर्शन है जो मन की प्रकृति को वास्तविकता मानता है। आदर्शवादी विचारों का मानना है कि जो बात सत्य वास्तविक एवं निश्चित रूप से आध्यात्मिक या मानसिक है साथ ही उनका यह विश्वास भी है कि भौतिक संसार मन की अभिव्यक्ति का सार रूप है।

<u>आदर्शवाद के प्रमुख सिद्धांत या आवश्यक तत्व-</u>

1-परमात्मा और आत्मा का शाश्वत अनादि अनंत अस्तित्व है।

2-ज्ञान का सर्वोच्च रूप अंतर्दृष्टि है और आध्यात्मिक जगत सच्ची वास्तविकता है।

3- आत्मनिर्णय एवं आत्मानुभूति परम लक्ष्य है।

4-मानव प्राणी जड़ प्रकृति से अधिक महत्वपूर्ण है।

5-इंद्रियों द्वारा सच्ची वास्तविकता को पहचाना नहीं जा सकता।

6-विचार वस्तु की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

<u>आदर्शवाद और शिक्षा</u>

पेस्टोलॉजी के अनुसार-शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक सर्वांगी पूर्ण और प्रगतिशील विकास है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार-शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित दैवीय शक्तियों की अभिव्यक्ति है।

<u>आदर्शवाद और शिक्षा के उद्देश्य-</u>

1-व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास या आत्मानुभूति

2-पवित्र जीवन जीने में सहायता करना

3-शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति

4-चारित्रिक एवं नैतिक विकास

5-सांस्कृतिक उन्नति

6-आत्म उपलब्धि या पूर्ण चेतना

7-श्रजन शक्ति एवं विवेक शक्ति का विकास

8-विश्व एवं व्यक्ति के मध्य एक समन्वय

<u>आदर्शवाद और पाठ्यक्रम-</u>

मानसिक क्रियाएं, सौंदर्य आत्म क्रियाएं, नैतिक क्रियाएं

आदर्शवाद एवं शिक्षण विधियां-

आदर्शवादी अपने को किसी एक विधि का भक्त न मानकर विभिन्न विधियों का निर्माण और निश्चय करने वाला मानते हैं अनेक आदर्शवादी शिक्षकों द्वारा विभिन्न शिक्षण विधियों को अपनाया गया है।

सुकरात-प्रश्न विधि

प्लेटो-संवाद विधि

अरस्तु-आगमन और निगमन विधि

हींगल-तर्क विधि

हर्बट-निर्देश विधि

फ्रोबेल-खेल द्वारा शिक्षा

<u>आदर्शवाद और शिक्षक</u>-

आदर्शवाद शिक्षा को अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है उसके अनुसार शिक्षक के कार्य को प्रॉबल के किंडर गार्डन वाले इस रूपक से बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया जा सकता है विद्यालय बाग है छात्र कोमल पौधे हैं और शिक्षक को माली।

<u>आदर्शवाद और अनुशासन</u>

आदर्शवाद के प्रतिपादक प्लेटो के अनुसार बच्चों को आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करने के लिए नैतिक आचरण आवश्यक होता है अतः हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है कि बच्चों को अनैतिक आचरण से रोके। वास्तविकता अनुशासन तो आत्मानुशासन है परंतु इसकी आदत डालने के लिए प्रारंभ में अध्यापक द्वारा अनुदेश देना अनिवार्य है।

<u>आदर्शवाद के गुण और दोष</u>

<u>गुण-</u>

1-आदर्शवादी शिक्षा बालकों में सत्यम शिवम सुंदरम जैसे श्रेष्ठ गुणों के विकास पर बल देती है।

2-आदर्शवाद शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करने में अपना अहम स्थान रखता है।

3-आदर्शवादी शिक्षा में शिक्षक को सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है।

4-आदर्शवादी शिक्षा बाल केंद्रित होते हुए भी इसमें बालक के व्यक्तित्व की अवहेलना नहीं किया करते।

5-आध्यात्मिक धार्मिक तथा नैतिक गुणों के विकास पर आदर्शवादी शिक्षा विशेष बल देती है।

<u>दोष</u>

1-आदर्शवादी शिक्षा के उद्देश्य अमूर्त है इनका संबंध बालक के वर्तमान जीवन से नहीं बल्कि भविष्य से है।

2-आदर्शवादी शिक्षा का पाठ्यक्रम आध्यात्मिक जीवन से प्रभावित है जबकि वास्तव में पाठ्यक्रम जीवन से संबंधित होना चाहिए।

3 आदर्शवाद में शिक्षक को सर्व प्रमुख स्थान प्रदान किया गया बालक को नहीं।

4-आदर्शवादी शिक्षण विधियां रटने पर अधिक बल देती है।